पद २९१ (राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

ताठा।।१।। 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति' हेंहि जाणूनी श्रुति। 'सर्वं

खल्वदं ब्रह्म' याची दृढ प्रतीति।।२।। 'नेति नेति नेति' वेद बोलोनि

राहे। माणिक म्हणे अनिर्वाच्य तेथें बोल न साहे।।३।।

इतुलेनें झालें काय रे। परब्रह्म हाता न ये रे ।।ध्रु.।। मी देह भ्रांति

जाय पुन्हां न ये त्या वाटा। अहं ब्रह्मास्मि म्हणूनी मनीं भरलासे